2

रिमझिम पाठ्यपुस्तक के अभ्यास-प्रश्नों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

सीमा*

विद्यालयी शिक्षा में पाठ्यचर्या का एक महत्वपूर्ण अंग विषयों की पाठ्यपुस्तकें हैं। पाठ्यपुस्तक ही वह माध्यम है जिसके समुचित प्रयोग द्वारा एक शिक्षक, अपेक्षित शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति कर पाने में सक्षम हो पाता है। पाठ्यपुस्तकें दिशा-निर्देशक के रूप में, शिक्षक को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया संपन्न करने में मदद करती हैं तथा साथ ही विद्यार्थियों में स्व अध्ययन की आदत को भी विकसित करती हैं। पाठ्यपुस्तकें स्वयं में अनेक तत्व समाहित किए रहती हैं। यदि यहाँ भाषा की पाठ्यपुस्तक के संदर्भ में बात की जाए तो हम पाएँगे कि इनमें पाठ व कविताओं अथवा विधागत वैविध्य व उनकी प्रासंगिकता एवं रोचकता, प्रयुक्त शब्दावली, चित्र-प्रस्तुतिकरण तथा अभ्यास-प्रश्न आदि तत्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रस्तुत लेख में पाठ्यपुस्तक के विश्लेषण का मुख्य आधार 'अभ्यास-प्रश्नों ' को बनाया गया है। राष्ट्रीय फोकस समूह के आधार-पत्र (2005) के अनुसार, अभ्यास-प्रश्न ऐसे होने चाहिए जिनमें अत्यंत सूक्ष्म अवलोकन व विश्लेषण की ज़रूरत पड़े। प्रस्तुत शोध पत्र में शोध का मुख्य विषय एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्मित प्राथमिक स्तर की हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तकें *रिमझिम* (भाग 3, 4, व 5) हैं जिसमें विशेषतः पाठांत में दिए गए अभ्यास-प्रश्नों की विविधता तथा साथ ही उनकी भाषा अधिगम में भूमिका का विश्लेषणात्मक अध्ययन दिया गया है।

पृष्ठभूमि

भाषा मनुष्य जीवन का आधार है। भाषा ही वह सर्वप्रथम साधन है जो व्यक्ति को सामाजिक प्राणी के रूप में विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान देती है। बच्चा जन्म के साथ ही अनुकरण व अभ्यास के माध्यम से मातृभाषा (घर की भाषा) सीखना आरंभ कर देता है तथा विद्यालय में प्रवेश के साथ ही, वह औपचारिक रूप से भाषा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में संलग्न होने लगता है। विद्यालय में भाषा केवल एक विषय के रूप में ही नहीं पढ़ाई जाती बल्कि वह अन्य विषयों को सीखने के महत्वपूर्ण साधन के रूप में भी पढ़ाई जाती है। भाषा अधिगम मुख्यतः कौशल केंद्रित

* *शोधार्थी*, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली विश्वविद्यालय तथा सहायक अध्यापिका, सर्वोदय कन्या विद्यालय, दिल्ली

प्रक्रिया है, जिसमें बालक सभी भाषायी कौशलों (सुनना, बोलना, लिखना तथा पढ़ना) पर अधिकार प्राप्त करता है। यदि बालक भाषायी कौशलों पर पर्याप्त अधिकार प्राप्त नहीं कर पाता तो वह अन्य विषयों में भी अपेक्षित अधिगम स्तर को हासिल कर पाने में सक्षम नहीं हो पाता।

विद्यार्थियों में भाषायी कुशलता विकसित करने हेतु, भाषा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया संपन्न की जाती है, जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों के भाषायी व्यवहार में अनुभव तथा प्रशिक्षण द्वारा परिवर्तन व परिवर्धन किया जाता है तथा उसे चारों भाषायी कौशलों में पारंगत करने का भरसक प्रयत्न किया जाता है। हमारी भारतीय कक्षाओं में पाठ्यपुस्तकें सीखने-सिखाने के एक महत्वपूर्ण साधन के रूप में प्रयुक्त की जाती हैं। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा – 2005 के आधार पर निर्मित हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तकें भाषा सीखने के सहज, सुगम व प्राकृतिक तरीकों का पुरज़ोर समर्थन करती हैं। पाठ्यपुस्तकें, पाठ्यसामग्री को व्यवस्थित व समग्र रूप में शिक्षक तथा विद्यार्थी, दोनों के लिए ही कार्य-प्रगति के सचेतक के रूप में कार्य करती हैं और जब बात मातृभाषा की पाठ्यपुस्तक की हो, तब पाठ्यपुस्तक की भूमिका और भी अहम हो जाती है। चूँकि मातृभाषा का प्रयोग एवं क्षेत्र इतना व्यापक है कि वह मानव जीवन के सभी क्षेत्रों एवं पक्षों से संबंधित है। इसीलिए भाषा की पाठ्यपुस्तक में विभिन्न प्रकार की विषय सामग्री, साहित्य, संस्कृति, धर्म, कला, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, खेलकूद, उद्योग, मनोरंजन आदि से संबंधित प्रकरणों का समावेश रहता है। यद्यपि मातृभाषा केवल एक विषय मात्र नहीं बल्कि सभी विषयों के सीखने का माध्यम भी है। इसी कारण मातृभाषा की पाठ्यपुस्तकों में अन्य विषयों से संबंधित पाठ अपनी वैचारिक एवं भाषिक सामग्री के साथ दिए जाते हैं। किसी भी पाठ्यपुस्तक में रचनाओं की विषयवस्तु के साथ-साथ अभ्यास-प्रश्नों की भी महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। अभ्यास-प्रश्न, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के मुख्य उपकरण के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। पठन एवं आकलन योजना के अंतर्गत ये अभ्यास-प्रश्न पूर्व-परीक्षा सोपान से लेकर संप्राप्ति परीक्षा तक दिए जाते हैं। *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा*—2005 में कहा गया है कि अभ्यास-प्रश्नों का मुख्य उद्देश्य भाषायी और सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार करना व सराहने की संवेदनशीलता विकसित करना है। पुस्तकों में विविध विषयों के संदर्भ में परिवेश और समाज के अवलोकन और सूक्ष्म विवरण से संबंधित प्रश्न होने चाहिए। चूँकि, कक्षा में कक्षा से बाहर की भाषा का विश्लेषण भाषा के विकास का सशक्त साधन है। यह विलेषण कक्षा के बहुभाषा संदर्भ में भी किया जाना चाहिए। पाठ्यपुस्तकों में रुचिपूर्ण रचनाओं के समावेश के साथ-साथ अभ्यास-प्रश्न पाठ्यपुस्तक को प्रभावी बनाते हैं। वहीं दूसरी ओर ये शिक्षण और परीक्षण दोनों के लिए ही अत्यंत समर्थ उपकरण हैं।

प्रस्तुत शोध आलेख के माध्यम से पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* (भाग 3, 4 व 5) में दिए गए अभ्यास-प्रश्नों के वैविध्य व स्वरूप को उद्घाटित करने का प्रयास किया गया है तथा साथ ही भाषा अधिगम में इनकी भूमिका का आकलन भी किया गया है। शोधार्थी

ने शोध उद्देश्यों के आधार पर अभ्यास-प्रश्नों का कोटिगत विश्लेषण किया। इन कोटियों के निर्धारण में शोधार्थी को डॉ. वीरेंद्र रावत के लघु शोध प्रबंध से काफ़ी सहायता प्राप्त हुई है जिसके परिणामस्वरूप शोधार्थी अभ्यास-प्रश्नों को निम्नलिखित कोटियों में वर्गीकृत करने में सक्षम हो पाई है, जो कि इस प्रकार है —

1. ज्ञानात्मक/तकनीकी प्रश्न

इस प्रकार के प्रश्न विद्यार्थियों से एकमात्र सही उत्तर की माँग करते हैं। ये मुख्यत: स्मृति पर आधारित होते हैं। ये प्रश्न मज़बूत चौखटे के आधार पर तैयार किए जाते हैं, जो कि पाठ की ऊपरी सतह से ही सरोकार रखते हैं। अत: ये प्रश्न विद्यार्थियों की प्रत्यास्मरण क्षमता की जाँच करने में सहायक होते हैं।

2. अर्थग्रहण/अनुभवपरक प्रश्न

ये प्रश्न विद्यार्थियों के अनुभवों व समझ पर आधारित होते हैं। ये प्रश्न विद्यार्थियों की बोधात्मक क्षमता की जाँच करते हैं तथा साथ ही उन्हें प्रश्नों के उत्तर व्यक्तिगत अनुभवों के आधार पर प्रदान करने के अवसर उपलब्ध कराते हैं।

3. चिंतनपरक व सृजनात्मक प्रश्न

चिंतनपरक प्रश्न विद्यार्थियों की सोचने, समझने और तर्क करने व साथ ही उसकी विवेकशीलता का प्रयोग करने के अवसर भी प्रदान करते हैं। इनमें प्रतीकात्मक व व्यंजनात्मक प्रश्नों का समावेश रहता है, जहाँ बालक को व्यक्तिगत अनुभवों का प्रयोग कर प्रदत्त समस्या को समाधान तक पहुँचाने का कार्य करना होता है। वहीं सृजनात्मक प्रश्न विद्यार्थी को स्वतंत्र चिंतन के आधार पर, मौलिक विचारों को प्रकट करने का भी पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाते हैं। ये प्रश्न विद्यार्थियों को बँधी-बँधाई परिपाटी का शिकार होने से बचाते हैं।

4. व्याकरणिक प्रश्न

ये प्रश्न विशेषत: भाषायी तत्त्वों पर आधारित होते हैं। इन प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थियों की भाषा संबंधी आधारभूत संकल्पना व प्रयोग कुशलता की जाँच की जाती है।

5. संवेदनशील प्रश्न

इस प्रकार के प्रश्न विद्यार्थियों को विभिन्न मुद्दों (जैसे—समाज, पर्यावरण, जेंडर, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों/व्यक्तियों तथा विविधता आदि से संबंधित) के प्रति संवेदनशील बनाने के उद्देश्य से रखे जाते हैं। ये प्रश्न विद्यार्थियों को समसामयिक विश्व से जोड़ने का कार्य भी करते हैं तथा उनमें सामान्य जागरुकता को भी विकसित करते हैं।

उपरोक्त वर्णित कोटियों के आधार पर *रिमझिम* शृंखला (भाग 3, 4 व 5) के अभ्यास-प्रश्नों के प्रस्तुतीकरण का विश्लेषणात्मक अध्ययन टिप्पणी सहित वर्णन इस प्रकार है —

1. ज्ञानात्माक/तकनीकी प्रश्न

(क) साफ़-सफ़ाई ('चाँद वाली अम्मा', भाग 3)

(i) किन-किन मौकों पर तुम्हारे घर पर सारा सामान हटाकर खूब ज़ोर-शोर से सफ़ाई होती है?

(ii) घर की सफ़ाई के लिए किन-किन चीज़ों का इस्तेमाल होता है?

(iii) ये मौके खास क्यों हैं?

(iv) लड़ाई-झगड़ा ('बंदर-बाँट', भाग 3)

— दोनों बिल्लियों के बीच झगड़े की जड़ क्या थी?

— उनके झगड़े का हल कैसे निकाला गया?

— तुम किस-किस के साथ अकसर झगड़ते हो?

— जब तुम किसी से झगड़ते हो, तो तुम्हारा फ़ैसला कौन करवाता है?

टिप्पणी — *रिमझिम* 3 में पूर्वोक्त प्रश्न की भाँति अन्य पाठों में भी प्रश्न हैं जिनमें किसी शीर्षक विशेष को ध्यान में रखकर प्रश्न दिए गए हैं। जैसे पाठ — 'बहादुर बित्तो' में 'कहानी में ढूँढ़ो' तथा नाटक 'बंदर-बाँट' में 'लड़ाई-झगड़ा' शीर्षक के अंतर्गत प्रश्न पूछे गए हैं।

(ख) पाठ्यवस्तु में निहित पंक्तियों पर आधारित प्रश्न

(i) कविता की वे पंक्तियाँ छाँटकर लिखो, जिनसे पता चलता है कि — ('मिर्च का मज़ा', भाग 3) काबुलीवाला कुछ शब्द अलग तरीके से बोलता था।

....

....

काबुलीवाला कंजूस था।

....

....

(ii) दिनेश की माँ मशीन चलाते-चलाते बोली, "बेटा, कहाँ जा रहे हो?" ('किरमिच की गेंद', भाग 4)

(iii) मंत्री ने अपने बेटे को शहर की तरफ़ रवाना किया। 'राख की रस्सी', भाग 5)

- मंत्री ने अपने बेटे को शहर क्यों भेजा था?
- उसने अपने बेटों को भेड़ों के साथ शहर में ही क्यों भेजा?

टिप्पणी — उपर्युक्त वर्णित प्रश्न पाठगत पंक्तियों के आधार पर पूछे गए हैं, जिसके द्वारा विद्यार्थियों को पाठ की तरफ़ पुनः वापसी के अवसर प्राप्त होंगे तथा साथ ही उनकी बोधात्मक क्षमता का भी विकास करने में मददगार होंगे।

(ग) वर्गीकरण पर आधारित प्रश्न

(i) तुलना करो शीर्षक के अंतर्गत प्रश्न ('सबसे अच्छा पेड़', भाग 3)

सही जगह पर (✓) का निशान लगाएँ

	नारियल		**आम**		**केला**	
सबसे घना						
चढ़ने में आसान						
सबसे मोटा तना						
सबसे बड़े पत्ते						

(ii) बूढ़ी अम्मा अकेली रहती थीं। उन्हें घर का सारा काम अकेले ही करना पड़ता होगा। उन कामों की सूची बनाओ, जो उन्हें सुबह से शाम तक करने पड़ते होंगे। यह भी बताओ कि तुम्हारे घर में ये काम कौन-कौन करता है। ('चाँद वाली अम्मा', भाग 3)

बूढ़ी अम्मा के काम	मेरे घर में कौन करता है
....	....
....	....

(iv) जानकारी देने या लेने के लिए कई तरीके अपनाए जाते हैं। हम जो कुछ सोचते या महसूस करते हैं, उसे अभिव्यक्त करने या बताने के भी कई ढंग हो सकते हैं। बॉक्स में ऐसे कुछ साधन दिए गए हैं। उनका वर्गीकरण करके ऊपर दी गई तालिका में लिखो। ('वे दिन भी क्या दिन थे', भाग 5)

संदेश	अभिनय	रेडियो	नृत्य का हाव-भाव
फ़ोन	विज्ञापन	नोटिस	संकेत भाषा
चित्र	मोबाईल	टी.वी.	मोबाईल
फ़ैक्स	इंटरनेट	तार	इश्तहार
जानकारी		भावनाएँ	
....		....	
....		....	

ऊपर लिखी चीज़ें एकतरफा भी हो सकती हैं और दोतरफा भी। जिन चीज़ों के ज़रिये एकतरफा संप्रेषण होता है उनके आगे (->) का निशान लगाओ। दोतरफा संवाद की चीज़ों के आगे (<->) का निशान लगाओ।

टिप्पणी — उपर्युक्त प्रश्न विद्यार्थियों की वर्गीकरण व पहचान संबंधी योग्यता तथा साथ ही उनमें विश्लेषणात्मक अभिवृत्ति का विकास करने में सहयोगी होंगे। सारत: यह कहा जा सकता है कि उपर्युक्त वर्णित प्रश्न तकनीक आधारित होते हुए भी विद्यार्थियों की विभिन्न मनोवैज्ञानिक क्षमताओं (पहचान, बोध, विश्लेषणात्मक आदि) को विकसित करने में सक्षमता लिए हुए हैं।

(घ) *पहचानो और मिलाओ ('सबसे अच्छा पेड़', भाग 3)*

यहाँ कुछ पत्तियों के बारे में कुछ वाक्य दिए गए हैं। वाक्यों को सही चित्र से मिलाओ। पत्ती पहचान पा रहे हो, तो उसका नाम भी लिख दो।

— लंबी पतली पत्ती, जो आगे से नुकीली है।

....

— नीचे से गोल आगे जाकर नुकीली हो जाती है।

....

— जिसके किनारे लहरदार हों।

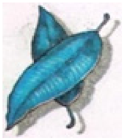

....

— गोल पत्ती।

....

2. अर्थग्रहण/अनुभवपरक प्रश्न

रिमझिम पाठ्यपुस्तक में अभिव्यक्ति का अर्थ सिर्फ़ कहानी या कविता लिखना ही नहीं है, बल्कि दूसरों के नज़रिए से घटना को देखना-समझ ना, कहानी के अलग-अलग मोड़ों पर अनुमान लगाना व साथ ही कहानी में घटित घटनाओं की तस्वीर अपने मन में बनाना आदि सभी कुछ बच्चे की कल्पना व अभिव्यक्ति को व्यक्त करने के माध्यम हैं।

(क) प्रत्यक्ष अनुभव आधारित प्रश्न

(i) मक्खी ने जब शेर को जगाया तो वह आग बबूला हो गया। तुम्हें जब कोई गहरी नींद से जगाता है तो तुम क्या करते हो? ('शेखीबाज़ मक्खी', भाग 3)

(ii) ख्वाजा सरा के तीनों सवालों का क्या कोई और जवाब हो सकता है? अपने मन से सोचकर लिखो। ('जैसा सवाल वैसा जवाब', भाग 4)

(ख) रचनाओं की पंक्तियों पर आधारित प्रश्न

(i) तुम्हारी समझ में ('मन के भोले-भाले बादल', भाग 4)

"कभी-कभी ज़िद्दी बन करके,
बाढ़ नदी-नालों में लाते"

बादल नदी-नालों में बाढ़ कैसे लाते होंगे?

(ii) नीचे दिए गए भाव कविता की जिन पंक्तियों में आए हैं, उन्हें छाँटो ('खिलौने वाला', भाग 5)

— खिलौने वाला साड़ी नहीं बेचता है।

— खिलौने वाला बच्चों को खिलौने लेने के लिए आवाज़ें लगा रहा है।

(ग) सूचना एकत्रीकरण पर आधारित प्रश्न

(i) फ़सल के त्योहार पर 'तिल' का बहुत महत्त्व होता है। ('फ़सलों के त्योहार', भाग 5)

- तिल का किन-किन रूपों से तेल बनता है? और किन चीज़ों से तेल बनता है और कैसे? हो सके तो तेल की दुकान में जाकर पूछो।

(ii) तुम कागज़ पर छपी किताबों से पढ़ते हो। पता करो कि कागज़ से पहले की छपाई किस-किस चीज़ पर हुआ करती थी? ('वे दिन भी क्या दिन थे', भाग 5)

(घ) पाठ्यपुस्तक रचना तथा विद्यार्थी में सामंजस्य व संबंध स्थापित करने पर आधारित प्रश्न

(i) कहानी और तुम ('दान का हिसाब', भाग 4)

— राजा राजकोष के धन का उपयोग किन-किन कामों में करता था?

- तुम्हारे घर में जो पैसा आता है, वह कहाँ-कहाँ खर्च होता है? पता करके लिखो।

— अकाल के समय लोग राजा से कौन-कौन से काम करवाना चाहते थे?

- तुम अपने स्कूल या इलाके में क्या-क्या काम करवाना चाहते हो?

(ङ) सामूहिक कार्य पर आधारित प्रश्न

(i) अपने आसपास अलग-अलग तरह के पेड़ देखो। तुम्हे उनमें कौन-कौन से आकार दिखाई देते हैं? सब मिलकर पेड़ों पर एक कविता भी तैयार करो।

(ii) क्या सचमुच बारिश के बादल समुद्र से पानी लाते हैं? वे इतना सारा पानी कैसे लाते होंगे? आपस में बातचीत करके पता करो। ('नाव बनाओ, नाव बनाओ', भाग 4)

(च) विश्लेषणात्मक प्रवृत्ति विकसित करने वाले प्रश्न

(i) आज हमारे कई काम कंप्यूटर की मदद से होते हैं। सोचो और लिखो कि अपने व्यक्तिगत और सार्वजनिक जीवन में हम कंप्यूटर का इस्तेमाल किन-किन उद्देश्यों के लिए करते हैं? ('वे दिन भी क्या दिन थे', भाग 5)

व्यक्तिगत	**सार्वजनिक**
....	....
....	....
....	....
....	....

टिप्पणी — दिए गए प्रश्न सीधे-सीधे विद्यार्थियों को अपने निजी अनुभवों के आधार पर जवाब देने के अवसर उपलब्ध कराते हैं। विद्यार्थियों को किसी निश्चित उत्तर की परिपाटी से हटाकर, उन्हें विभिन्न स्रोतों से जानकारी एकत्रित करने की दिशा में अग्रसर करते हैं। ये प्रश्न विद्यार्थियों के अनुभवों को विस्तार भी प्रदान करते हैं तथा साथ ही उनकी विश्लेषणात्मक क्षमता का भी विकास करते हैं जिसका हवाला एन.सी.एफ़.— 2005 में भी दिया गया है। ये प्रश्न विद्यार्थियों में समूह में कार्य करने की आदत को भी विकसित करने में मददगार साबित होते हैं। अत: इस प्रकार के प्रश्न विद्यार्थियों को उनके दैनिक जीवन से भी जोड़ने के अवसर प्रदान करते हैं।

(छ) प्रश्न की पुनरावृत्ति ('बहादुर बित्तो', भाग 3)

'बहादुर बित्तो' पाठांत में एक ही प्रश्न दो भिन्न शीर्षकों के अंतर्गत दिया गया है —

- बोलो, तुम क्या सोचती हो।

बित्तो की हिम्मत तुम्हें कैसी लगी? अगर तुम बित्तो की जगह होतीं तो शेर से कैसे निपटतीं?

- अगर ऐसा होता तो

अगर तुम बित्तो की जगह होतीं तो शेर से कैसे निपटतीं?

टिप्पणी — एक ही उद्देश्य को ध्यान में रखकर दो बार, एक ही प्रश्न पूछने का क्या औचित्य है? इसे समझना मुश्किल है। अत: इस प्रकार की पुनरावृत्ति से सदैव बचना चाहिए।

(ज) अस्पष्ट प्रश्न ('चाँद वाली अम्मा', भाग 3)

पुस्तक में एक पूरे पृष्ठ पर चाँद व दो-चार तारे बनाकर, निम्नलिखित प्रश्न पूछे गए हैं —

प्रश्न — तुम्हें चाँद में क्या दिखाई देता है? बनाओ।

टिप्पणी — यदि विद्यार्थियों को चाँद में कुछ न दिखाई दे, तो उस स्थिति में वे क्या करेंगे। वे यह भी कह सकते हैं कि चाँद तो सफ़ेद होता है, और उसमें उन्हें कुछ भी नज़र नहीं आता तो ऐसी दशा में विद्यार्थी प्रश्न को लेकर संदिग्धता की स्थिति में आ जाएँगे। अत: इस प्रकार के अस्पष्ट प्रश्नों को पुस्तक में अपेक्षित सुधार के साथ ही प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

(झ) नकारात्मक दृष्टिकोण पर आधारित प्रश्न ('मन करता है', भाग 3)

प्रश्न — तुम पर कौन-कौन धौंस जमाता है? और क्यों?

टिप्पणी — ये प्रश्न विद्यार्थियों को विपरीत परिस्थितियों में उचित प्रतिक्रिया का अभ्यास करवाने में सहायक सिद्ध होंगे तथा साथ ही ये प्रश्न विद्यार्थियों को और अधिक व्यावहारिक बनाने की दिशा में भी कार्य करते हैं।

घर में	स्कूल में
....	....
आसमान में	खेल में
जंगल में	स्कूल में
नदी में	रंगों में

(ञ) इसी तरह का एक प्रश्न 'हमसे सब कहते' कविता भाग 3 में भी दिया गया है, जो कि इस प्रकार है —

अम्मा, पापा, भैया, दीदी सभी पर बड़ों का बच्चों पर बस चलता है।

- तुम्हारा किस-किस पर बस चलता है?

  ....

- तुम्हारे घर में कौन-कौन टोकता रहता है?

  ....

- किन-किन बातों पर तुम्हें अकसर टोका जाता है?

  ....

3. चिंतनपरक व सृजनात्मक प्रश्न

(क) प्रत्यक्षत: चिंतन पर आधारित प्रश्न

(i) अगर तुम शेर की जगह होतीं तो क्या करतीं? ('बहादुर बित्तो', भाग 3)

(ii) यह कहानी एक ऐसे दिन की है जब मूसलाधार बारिश हो रही थी। अगर मूसलाधार बारिश के बजाए बूँदा-बाँदी होती तो क्या होता? ('टिपटिपवा', भाग 3)

(ख) कहानी आगे बढ़ाओ

(i) विद्यालय, गुरुजी, छुट्टी, बंदर, डंडा, पेड़, केला, ताली, बच्चे, भूख। इन शब्दों को पढ़कर तुम्हारे मन में कुछ बातें आई होंगी। इन सब चीज़ों के बारे में एक छोटी-सी कहानी बनाओ और अपने साथियों को सुनाओ। ('कब आऊँ', भाग 3)

(ii) एक बार फिर से कविता पढ़ो। इस कविता में एक नाव के बनने और पानी में सफ़र करने की कहानी छिपी है। मान लो तुम ही वह नाव हो। अब अपनी कहानी सबको सुनाओ। शुरुआत हम कर देते हैं। ('नाव बनाओ, नाव बनाओ', भाग 4)

- मैं एक नाव हूँ। मैं कागज़ से बनी हूँ। मुझे एक लड़के ने बनाया। उसका नाम तो मुझे नहीं पता पर

  ....

  ....

  ....

  ....

टिप्पणी — इस तरह के प्रश्न विद्यार्थियों की काल्पनिक क्षमता और लेखन कौशल दोनों का ही विकास करने में सहायक होते हैं। यदि विद्यार्थियों में पर्याप्त लेखन कौशल विकसित हो चुका हो तो वे इन प्रश्नों के अभ्यास में और भी अधिक रुचि रखेंगे जिसके द्वारा वे पहले से बेहतर रूप में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शामिल होंगे।

(ग) कवि की कविताओं के तुलनात्मक अध्ययन के आधार पर प्रश्न

(i) तीसरी कक्षा में रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता 'मिर्च का मज़ा' पढ़ी थी। अब तुमने उन्हीं की कविता 'पढ़क्कू की सूझ' पढ़ी। ('पढ़क्कू की सूझ', भाग 4)

— दोनों में से कौन-सी कविता पढ़कर तुम्हें ज़्यादा मज़ा आया?

— तुम्हें काबुलीवाला ज़्यादा अच्छा लगा या पढ़क्कू? या कोई भी अच्छा नहीं लगा?

— अपने साथियों के साथ मिलकर एक-एक कविता ढूँढ़ो। कविताएँ इक्कठ्ठा करके कविता की एक किताब बनाओ।

टिप्पणी — इस प्रकार के प्रश्न विद्यार्थियों को किसी कवि की विशिष्ट लेखन शैली से परिचित कराते हैं तथा साथ ही उसकी रचनाओं के चरित्र प्रकटीकरण पर भी दृष्टिपात करने के अवसर उपलब्ध कराते हैं। इस तरह के प्रश्न विद्यार्थियों की साहित्य में रुचि परिवर्धन का कार्य भी करते है।

(घ) आलोचनात्मक दृष्टि विकसित करने हेतु प्रश्न

(i) अगर दीपक और दिनेश गेंद के बारे में फ़ैसला करवाने तुम्हारे पास आते, तो तुम गेंद किसे देतीं? यह भी बताओ कि तुम यह फ़ैसला किन बातों को ध्यान में रखकर करतीं? ('किरमिच की गेंद', भाग 4)

(ii) राजा किसी को दान देना पसंद नहीं करता था। तुम्हारे विचार से राजा सही था या गलत? अपने उत्तर का कारण भी बताओ। ('दान का हिसाब', भाग 4)

टिप्पणी — ये प्रश्न विद्यार्थियों को तार्किक ढंग से फ़ैसला लेने हेतु अभ्यास के अवसर उपलब्ध करवाते है, जो कि उन्हें पक्षपात रहित निर्णय करने की दिशा में भी अग्रसर करते हैं।

(ङ) संवाद निर्माण पर आधारित प्रश्न

(i) जब जमाल साहब और नसीरूद्दीन हुसैन साहब के घर से बाहर निकले तो उन्होंने अपनी बेगम को नसीरूद्दीन और जमाल साहब से मुलाक़ात का किस्सा सुनाया। उन दोनों के बीच में क्या बातचीत हुई होगी? लिखकर बताओ। ('दोस्त की पोशाक', भाग 4)

बेग़म — कौन आया था?

हुसैन साहब — नसीरूद्दीन अपने दोस्त के साथ आया था।

बेगम —

....

....

....

टिप्पणी — इस तरह के प्रश्न विद्यार्थियों में संप्रेषणपरक कौशल विकसित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप वे सामाजिक संव्यवहार में भी कुशलता प्राप्त करने में सक्षम हो पायेंगे।

(च) शीर्षक आधारित प्रश्न

(i) अगर कहानी का नाम मक्खी को ध्यान में न रखकर लोमड़ी और शेर को ध्यान में रखकर

लिखा जाता तो उसके क्या-क्या नाम हो सकते थे? ('शेखीबाज़ मक्खी', भाग 3)

(ii) नाटक का नाम 'थप्प रोटी थप्प दाल' क्यों है? ('थप्प रोटी थप्प दाल', भाग 4)

टिप्पणी—यह प्रश्न विद्यार्थियों में पूरे पाठ/रचना को उसके संपूर्ण रूप में, पहले विश्लेषित तथा फिर संश्लेषित रूप में ग्रहण करवाने में लाभदायक होगा।

(छ) चित्र आधारित प्रश्न

(i) कविता के पहले पद को दोबारा पढ़ो। वर्णन पर ध्यान दो। इसे पढ़कर जो चित्र तुम्हारे मन में उभरा, उसे बनाओ। बताओ चित्र में तुमने क्या-क्या दर्शाया। ('छोटी-सी हमारी नदी', भाग 5)

टिप्पणी—यह प्रश्न विद्यार्थियों की बिंब निर्माण क्षमता का विकास करने में प्रभावी सिद्ध होगा।

(ज) डायरी–लेखन पर आधारित प्रश्न

('डाकिए की कहानी कँवरसिंह की जुबानी', भाग 5)

(i) अपनी डायरी बनाओ और उसमें खुद से जुड़ी महत्पूवर्ण बातें लिखो।

(ii) डायरी में तुम अपने स्कूल के बारे में क्या लिखना चाहोगे।

टिप्पणी—यह प्रश्न विद्यार्थियों में अपने दैनिक जीवन की घटनाओं को क्रमवार ढंग से संजोने का अभ्यास करवाने में सफल होगा, साथ ही वे डायरी जैसी नयी साहित्यिक विधा से भी परिचित हो सकेंगे।

(झ) समाचार-लेखन पर आधारित प्रश्न

(i) 'बाघ आया उस रात' कविता के आधार पर 'समाचार' लिखो। ('बाघ आया उस रात', भाग 5)

टिप्पणी—यह प्रश्न विद्यार्थियों को पत्रकारिता की एक झलक दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

सारत: यह कहा जा सकता है कि चिंतनपरक व सृजनात्मक प्रश्न की कोटि में प्रश्नों का प्रस्तुतीकरण अत्यंत विविधता लिए हुए है। कहीं कहानी आगे बढ़ाओ, तो कहीं संवाद निर्माण, डायरी लेखन, समाचार लेखन आदि के रूप में प्रश्नों का निर्माण किया गया है। ये प्रश्न विद्यार्थियों को भाषा की विभिन्न विधाओं से भी परिचित कराते हैं। इन प्रश्नों द्वारा विद्यार्थियों में आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करने में भी भरपूर सहायता प्राप्त होती है। ऐसे प्रश्नों का अत्यंत महत्त्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि ये विद्यार्थियों में स्वतंत्र चिंतन की प्रवृत्ति का विकास करते हैं जिसके फलस्वरूप उनमें मौलिक लेखन की क्षमता में अभिवृद्धि संभव हो पाती है। वस्तुत: ये प्रश्न विद्यार्थियों में सृजनात्मक लेखन कौशल को विकसित करने के भरपूर मौके प्रदान करते हैं।

(ञ) शीर्षक-आधारित प्रश्न ('थप्प रोटी थप्प दाल', भाग 4)

(i) नाटक का नाम 'थप्प रोटी थप्प दाल' क्यों है?

(ii) तुम इसे क्या शीर्षक देना चाहोगे?

- ....
- ....

टिप्पणी—*रिमझिम* 4 में शीर्षक-आधारित केवल यही एकमात्र प्रश्न है जबकि *रिमझिम* 3 में ऐसे प्रश्नों की संख्या 3 है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह कुछ अनुचित दिखाई देता है, क्योंकि उपयुक्त शीर्षक सुझाने हेतु विद्यार्थियों को पूरी कहानी या कविता को गहनता से समझना अपेक्षित है और ऐसी अपेक्षा कक्षा 3 के विद्यार्थियों से अधिक व कक्षा 4 के विद्यार्थियों से कम करना, कुछ उचित दिखाई नहीं देता।

4. व्याकरणिक प्रश्न

फोकस समूह का आधार समूह पत्र *आधुनिक भारतीय भाषाओं का शिक्षण* (1.3) में व्याकरण सिखाने के संदर्भ में विचार-व्याकरण की समझ, बच्चों को उसके विभिन्न पक्षों की पहचान, विविध पाठों के संदर्भ में और आसपास के परिवेश से जोड़कर कराई जाए। अमूर्त परिभाषाओं की जगह वास्तविक संदर्भों में समझना, इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए पाठ्यपुस्तकों के अभ्यास-प्रश्न, कक्षा-कक्ष की व्यावहारिक गतिविधियाँ और युक्तियाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। इसके लिए शिक्षक को चरणबद्ध क्रम का अनुसरण करना चाहिए।

(i) भाषिक तत्त्वों की पहचान करना।

(ii) भाषिक तत्त्वों का प्रयोग करना।

(क) वर्णमाला पर आधारित प्रश्न ('कक्कू', भाग 3)

(i) पाँच-पाँच बच्चों की टोली बना लो। अब अपनी-अपनी टोलियों के बच्चों के नाम रेल के डिब्बों पर लिखो।

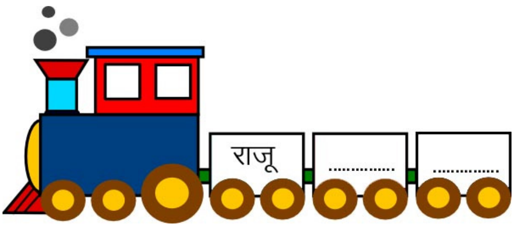

वर्णमाला याद है न? चलो, अब इन नामों को वर्णमाला के हिसाब से क्रम में लगाते हैं।

टिप्पणी — यह प्रश्न विद्यार्थियों में वर्णमाला व उसके अनुक्रम की पुन: स्मृति कराने में मददगार साबित होता है। साथ ही इस प्रश्न के रुचिपूर्ण प्रस्तुतीकरण के कारण विद्यार्थी भाषा की तकनीकी प्रकृति को सरल व सहज रूप में प्रस्तुत करते हैं।

(ख) मुहावरों पर आधारित प्रश्न

(i) चित्रों के माध्यम से मुहावरे पहचानना ('कब आऊँ', भाग 3)

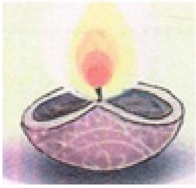

अँधेरा

आरसी

आस्तीन

ग्यारह

(ग) अभिनय के आधार पर मुहावरों का प्रयोग करके दिखाओ

नीचे कुछ वाक्य लिखे हैं। तुम्हें इनका अभिनय करना है। तुम चाहो तो कहानी में देख सकते हो कि इन कामों का ज़िक्र कहाँ आया है—

- बनठन कर घूमने के लिए निकलना
- घड़ों पानी पड़ना
- मुँह बनाकर शिकायत करना
- गर्मजोशी से स्वागत करना

टिप्पणी—इस प्रकार यहाँ स्पष्टत: देखा जा सकता है कि *रिमझिम* में मुहावरों के अर्थ व प्रयोग को रटंत प्रणाली पर याद न कराकर बल्कि उन्हें रुचिपूर्ण ढंग से प्रस्तुत कर संदर्भगत प्रयोग के अवसर उपलब्ध कराए गए हैं, जो कि विद्यार्थियों की सहभागिता को बढ़ाते हुए कक्षा-कक्ष को जीवंत भी बनाए रखते हैं।

(घ) सर्वनाम पर आधारित प्रश्न

एक शब्द के बदले दूसरा ('पापा जब बच्चे थे', भाग 4)

"पापा को वायुयान चालक बनने की सूझी। इसके बाद उन्होंने अभिनेता बनने की सोची। इसके अलावा वह जहाज़ी भी बनना चाहते थे।"

ऊपर के वाक्यों में 'उन्होंने' और 'वह' का इस्तेमाल पापा की जगह पर हुआ है। हम अकसर एक ही शब्द को दोहराने के बजाय उसकी जगह किसी दूसरे शब्द का इस्तेमाल करते हैं। 'मैं', 'तुम', 'इस' भी ऐसे ही शब्द हैं।

(i) पाठ में से ऐसे शब्दों के पाँच उदाहरण छाँटो।

(ii) इनकी मदद से वाक्य बनाओ।

नोट— *रिमझिम* भाग 5 में विकल्प देकर, उचित सर्वनाम प्रयोग पर आधारित प्रश्न भी दिया गया है।

(ड.) कारक-चिह्नों पर आधारित प्रश्न ('चावल की रोटियाँ', भाग 5)

के, में, ने, को, से ..... कोको की माँ ने कल दुकान से एक फूलदान खरीदा था। ऊपर लिखे वाक्य में जिन शब्दों का आपस में संबंध बताते हैं। नीचे एक मज़ेदार किताब 'अनारको के आठ दिन' का एक अंश दिया है। उसके खाली स्थानों में इस प्रकार के सही शब्द लिखो?

अनारको एक लड़की है। घर .... लोग उसे अन्नो कहते हैं। अन्नो नाम छोटा-सा है, सो उस.......... आज .... और जमकर उसमें भीगी भी अनारको। खूब उछली भी, कूदी भी, चारों तरफ़ पानी छिटकाया था और खूब-खूब भीगी थी।

(च) योजक शब्द पर आधारित प्रश्न ('एक माँ की बेबसी', भाग 5)

अपनी माँ के बारे में सोचते हुए नीचे लिखे वाक्यों को पूरा करो —

(i) मेरी माँ बहुत ख़ुश होती है, जब ....
....

(ii) माँ मुझे इसलिए डाँटती हैं, क्योंकि ....
....

(iii) माँ उस समय बहुत बेबस हो जाती हैं, जब
....

(iv) मैं चाहती/ता हूँ कि मेरी माँ ....
....

(झ) *शब्द आधारित प्रश्न*

नीचे लिखे वाक्य पढ़ो — ('जैसा सवाल वैसा जवाब', भाग 4)

- मैं बस में बैठकर स्कूल जाती हूँ।
- ख्वाजा सरा का बस चलता तो वे बीरबल को निकाल देते।
- बस! रुक जाओ। बस दो दिन की तो बात है। मैं आ जाऊँगी।

ऊपर लिखे वाक्यों में 'बस' शब्द के अर्थ अलग-अलग हैं। अब इसी तरह 'चल' शब्द से वाक्य बनाओ।

(संकेत — चल, चला, चलें, चलना, चलती, चलो)

टिप्पणी — *रिमझिम* शृंखला में व्याकरणिक इकाइयों को भी अत्यंत रुचिकर ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यदि उदाहरण के तौर पर मुहावरे वाले प्रश्नों पर भी एक दृष्टिपात किया जाए तो हम यह देख सकते हैं कि किस प्रकार चित्रों के माध्यम से व अभिनय द्वारा विद्यार्थियों को मुहावरे सिखाने का प्रयास किया गया है जो

कि मुहावरे सीखने-सिखाने का बहुत ही नवीनीकृत तरीका है। वहीं यदि कारक-चिह्नों पर आधारित प्रश्न की बात की जाए तो ये प्रश्न कारक चिह्न सिखाने का अत्यंत प्रभावशाली तरीका प्रस्तुत करते हैं। वहीं अगर सर्वनाम आधारित व शब्द-आधारित प्रश्नों की बात की जाये तो ये प्रश्न विद्यार्थियों को संदर्भगत रूप में भाषागत इकाइयों को समझने में सहायक सिद्ध होते हैं तथा साथ ही विद्यार्थियों को इन भाषागत इकाइयों को व्यावहारिक तौर पर इस्तेमाल प्रयोग करने में सक्षम बनाते हैं।

अत: उपर्युक्त वर्णित प्रश्नों के माध्यम से यह स्पष्टत: देखा जा सकता है कि *रिमझिम* श्रृंखला में व्याकरणिक इकाइयों को रटवाने पर बल नही है, बल्कि उन्हें (व्याकरणिक) कैसे विद्यार्थियों की दैनिक भाषा का सहज हिस्सा बनाया जाये, इस पर ध्यान केंद्रित किया गया है, जो कि एन.सी.एफ़.—2005 के अनुसार भी अत्यंत सटीक है।

5. संवेदनशील प्रश्न

(क) बहुभाषिक संदर्भ आधारित प्रश्न

(i) हाँ बचवा, न शेरवा के डर, न बाघवा के डर। डर तो डर, टिपटिपवा के डर। ('टिपटिपवा', भाग 3)

(ii) गुजरात में आदर के लिए नाम के साथ भाई-बहन जैसे शब्दों का प्रयोग होता है। तेलुगु में नाम के आगे 'गारू' और हिंदी में 'जी' जोड़ा जाता है। तुम्हारी कक्षा में भी अलग-अलग भाषा बोलने वाले बच्चे होंगे। पता करो और लिखो कि वे अपनी भाषा में किसी को आदर देने के लिए किन-किन शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। ('मुफ़्त ही मुफ़्त', भाग 4)

(iii) कोको की माँ ने अपने लिए चावल की रोटियाँ बनाकर रखी थीं। भारत के विभिन्न प्रांतों में चावल अलग-अलग तरीके से इस्तेमाल किया जाता है जैसे—भोजन के हिस्से के रूप में भी तथा नमकीन और मीठे पकवान के रूप में भी। तुम्हारे प्रांत में चावल का इस्तेमाल कैसे होता है? घर में बातचीत करके पता करें और एक तालिका बनाओ। कक्षा में अपने दोस्तों की तालिका के साथ मिलान करो तो पाओगे कि भाषा, कपड़ों और रहन-सहन के साथ-साथ खान-पान की दृष्टि से भी भारत अनूठा है।

टिप्पणी— चूँकि, भारत एक विविध सांस्कृतिक परिवेश वाला देश है, इसलिए देश के प्रत्येक नागरिक के मन में परस्पर एक-दूसरे की संस्कृति के प्रति स्वीकार्यता व सम्मान अत्यंत आवश्यक है तभी हमारा देश संगठित व अटूट बना रह सकता है। उपर्युक्त प्रश्नों के माध्यम से प्राथमिक स्तर से ही विद्यार्थियों में धीरे-धीरे अन्य भाषाओं व संस्कृतियों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने तथा उन्हें विविध सांस्कृतिक रीति-रिवाज़ों से जोड़ने का प्रयास किया गया है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, जबकि असहिष्णुता जैसे मुद्दे हमारे समाज व देश को कमज़ोर बनाने का प्रयास कर रहे हैं, ऐसे में पारस्परिक संस्कृतियों व विभिन्नताओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना समय की माँग भी है। (एन.सी.एफ़. — 2005 में भी भाषायी विविधता को भाषायी संबल माना गया है।)

(ख) पर्यावरण संबंधी प्रश्न

(i) इस कहानी में सेबों के खेतों और सीढ़ीनुमा खेत का ज़िक्र आया है। अनुमान लगाकर बताओ कि यह कहानी भारत के किस भौगोलिक क्षेत्र की होगी और वहाँ सीढ़ीनुमा खेती क्यों की जाती होगी? ('बिशन की दिलेरी', भाग 5)

(ii) 'पानी रे पानी' पाठ में पानी के संकट (अकाल) तथा बाढ़ संबंधी विषयों पर आधारित प्रश्न दिए गए हैं? ('पानी रे पानी', भाग 5)

वर्तमान में पूरे विश्व में ही 'पर्यावरण संरक्षण' की आवश्यकता को पूरे ज़ोर-शोर से महसूस किया जा रहा है जिसका मुख्य कारण वैश्विक जलवायु में निरंतर परिवर्तन होना है। वैश्विक जलवायु को मानव रहने योग्य बनाए रखने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि भावी पीढ़ियों में विभिन्न पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता विकसित की जाए, ताकि वे स्वयं इसे सुरक्षित बनाने की दिशा में प्रयासरत हो सकें। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उपर्युक्त प्रश्नों को एक सकारात्मक कदम के रूप में देखा जा सकता है। साथ ही हमारी हिंदी कक्षाओं में विषय संबंधी चर्चा चिंतन के अवसर भी उपलब्ध करवाती है।

(ग) विभिन्न सामाजिक मुद्दों से संबंधित प्रश्न

(i) महिला संबंधी समस्याओं पर आधारित प्रश्न

- हम किसी से कम नहीं ('बहादुर बित्तो', भाग 4)
- कई जगहों पर गाँवों में औरतें खेतों में भी काम करती हैं। तुम्हारे आसपास की औरतें और लड़कियाँ क्या-क्या काम करती हैं।
- स्वामीनाथन दादी के पास बहुत प्रसन्न और सुरक्षित महसूस कर रहा था ('स्वामी की दादी', भाग 5) तुम इन हालात में कैसा महसूस करती हो?
  — दोस्त के घर में।
  — जब तुम पहली बार किसी के घर जाती हो।
  — रेलगाड़ी या बस में किसी सफ़र पर।
  — जब तुम मुख्याध्यापक के कमरे में जाती हो।

उपर्युक्त प्रश्न स्त्री-स्वायत्तता तथा स्त्री-सुरक्षा जैसे संजीदा मुद्दों पर चर्चा के अवसर उपलब्ध कराते हैं जो कि अत्यंत ही सराहनीय प्रयास है। इस प्रकार के प्रश्न विद्यार्थियों में बचपन से ही जेंडर संबंधी अवधारणाओं के प्रति आलोचनात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में लाभप्रद साबित होते हैं जो कि बच्चों में सामाजिक समझ को भी विकसित करते हैं।

(ii) जेंडर-आधारित प्रश्न

तुम क्या बनातीं?

इन बच्चों की जगह तुम होतीं तो खाने के लिए कौन से तीन पकवान बनातीं? उन्हें बनाने के लिए किन चीज़ों की ज़रूरत पड़ती? पता करो और सूची बनाओ।

टिप्पणी — इस प्रश्न में यह समस्या है कि 'तुम क्या बनातीं' पूछा गया है जोकि समाज में इस रूढ़िवादी मान्यता को और अधिक पुख्ता करता है कि खाना केवल लड़कियाँ या महिलाएँ ही बना सकती हैं। यद्यपि ये पाठ्यपुस्तकें प्राथमिक स्तर के लड़के व लड़कियाँ दोनों को ही पढ़नी हैं, तो फिर यहाँ उभयनिष्ठ जेंडर की बात क्यों नहीं की गई? यहाँ 'तुम क्या बनाते', भी तो पूछा जा सकता था। अत: पाठ्यपुस्तक निर्माताओं को इस प्रकार के दुराग्रहों से बचना चाहिए।

पकवान का नाम	**किन चीज़ों की ज़रूरत होगी**
....	....
....	....

(घ) बाल-श्रम पर आधारित प्रश्न

केशव दस साल का है। क्या उसकी उम्र के बच्चों को इस तरह से जुड़ना ठीक है? अपने उत्तर के कारण ज़रूर बताओ।

टिप्पणी— यह प्रश्न बच्चों में बाल-श्रम जैसी जटिल समस्या पर, उन्हें चिंतनशील बनाने का प्रयास करता है। साथ ही विद्यार्थियों में बाल-श्रमिकों के प्रति संवेदनशील दृष्टिकोण का भी विकास करता है।

(ङ) विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों के प्रति संवेदनशीलता विकसित करने वाले प्रश्न

(i) सुनीता जैसे कई बच्चे हैं। इनमें से कुछ देख नहीं सकते तो कुछ बोल या सुन नहीं सकते। कुछ बच्चों के हाथों में परेशानी है, तो कुछ चल नहीं सकते। तुम ऐसे ही किसी एक बच्चे के बारे में सोचो यदि तुम्हें कोई शारीरिक परेशानी है तो अपनी चुनौतियों के बारे में भी सोचो। उस चुनौती का सामना करने के लिए तुम क्या आविष्कार करना चाहोगे? उसके बारे में सोचकर बताओ कि (सुनीता की पहिया कुर्सी, भाग 4)

- तुम वह कैसे बनाओगे?
- उसे बनाने के लिए किन चीज़ों की ज़रूरत होगी?
- वह चीज़ क्या-क्या काम करेगी?
- उस चीज़ का चित्र भी बनाओ।

(ii) क्या इला अपने पैर के अँगूठे से कुछ भी करना सीख पाती, अगर उसके आसपास के लोग उसके लिए सभी काम स्वयं कर देते और उसको कुछ करने का मौका नहीं देते? ('जहाँ चाह वहाँ राह', भाग 5)।

टिप्पणी— प्रस्तुत प्रश्न विद्यार्थियों को विशेष आवश्यकता वाले व्यक्तियों को होने वाली परेशानियों से अवगत कराते हैं। ये प्रश्न इन व्यक्तियों को अपने दैनिक जीवन में किस प्रकार की समस्याओं एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ता है इस संदर्भ में जागरुकता उत्पन्न करते हैं। ऐसे प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थी, इन "विशेष व्यक्तियों को होने वाली समस्याओं" को संबोधित करने के नए-नए उपायों को सुझाने में सक्षम भी हो पाते हैं। *रिमझिम* शृंखला में विविध समसामयिक विषयों के साथ-साथ विभिन्न सामाजिक समस्याओं को भी विषयवस्तु का हिस्सा बनाया गया है, जोकि अत्यंत सराहनीय प्रयास है।

निष्कर्ष

पाठ्यपुस्तक *रिमझिम* (भाग 3, 4 व 5) के अभ्यास प्रश्नों के कोटिगत विश्लेषण से यह पाया गया कि इन पाठ्यपुस्तकों में अधिकांश अभ्यास-प्रश्नों की प्रस्तुति अत्यंत ही रुचिकर व स्तरानुसार (मानसिक/ संज्ञानात्मक) है। ये अभ्यास-प्रश्न, विद्यार्थियों को मुख्य भाषायी कौशलों (सुनना, बोलना पढ़ना व लिखना) में शामिल होने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध कराते हैं। इसके साथ ही विद्यार्थियों की कल्पनाशीलता, रचनात्मकता, सृजनात्मकता आदि क्षमता का भी विकास करने में सक्षम दिखाई देते हैं। अभ्यास-प्रश्नों की वैविध्यता व रोचकता बच्चों की हिंदी भाषा अध्ययन में रुचि को बढ़ाने में भी सहायक है। विद्यार्थियों में भाषा के व्यावहारिक ज्ञान व समझ हेतु, पुस्तक में संवाद निर्माण पर आधारित प्रश्न निर्माण कला व अभिनय आदि पर आधारित प्रश्नों को उपयुक्त स्थान दिया गया है। चिंतनपरक प्रश्नों के माध्यम से विद्यार्थियों को कई सामाजिक व पर्यावरण से जुड़े संवेदनशील मुद्दों के प्रति भी सजग बनाने का प्रयास किया गया है। व्याकरण-शिक्षण के संदर्भ में

अभ्यास-प्रश्नों की समीक्षा करने पर पाया कि संदर्भगत भाषा-प्रयोग को मुख्य आधार बनाकर, प्रश्न निर्माण किए गए हैं। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी अभ्यास-प्रश्नों का स्वरूप व संख्या, कक्षा-स्तरानुसार उपयुक्त दिखाई देती है। वहीं दूसरी ओर *रिमझिम* (भाग 3, 4 व 5) में कहीं-कहीं कुछ अस्पष्ट प्रश्न, जेंडर पूर्वाग्रह अथवा जेंडर संबंधी रूढ़िवादी मान्यताओं पर आधारित प्रश्न तथा साथ ही नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने वाले प्रश्न पाए गए हैं तो कहीं एक ही प्रश्न दो बार एक समान उद्देश्य को ध्यान में रखकर पूछा गया है। इस तरह के प्रश्नों के संदर्भ में, पाठ्यपुस्तक निर्माताओं द्वारा पुन: दृष्टिपात कर अपेक्षित सुधार की आवश्यकता है। इसके साथ ही यह पुस्तक/अभ्यास-प्रश्न शिक्षकों को एक संरचनावादी कक्षा-कक्ष संव्यवहार हेतु अपेक्षाकृत और अधिक संसाधित होने की माँग भी करती है तथा साथ ही एक शिक्षक को कक्षा में एक सुगमकर्ता (facilitator) की भूमिका निभाने की दिशा में प्रेरित करती है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि *रिमझिम* शृंखला (भाग 3, 4 व 5) में अभ्यास-प्रश्न भाषा अधिगम की दृष्टि से अत्यंत परिपूरक, संसाधित व प्रभावशाली प्रस्तुतीकरण लिए हुए हैं, जो कि अंतत: विद्यार्थियों की भाषा अधिगम कुशलता को विस्तार प्रदान करने में भी सक्षम हैं।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 2005. राष्ट्रीय फ़ोकस समूह का आधार पत्र—*आधुनिक भारतीय भाषाओं का शिक्षण* (1.3). एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

——. 2006. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

——. 2006. *कैसे पढ़ाएँ रिमझिम*, शिक्षक संदर्शिका, एन.सी.ई.आर.टी., दिल्ली.

——. 2009. *रिमझिम* भाग — 3, 4 व 5. एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली.

रस्तोगी, गोपाल कृष्ण. *शिक्षण में प्रश्नों का उपयोग*, अर्चना प्रकाशन, दिल्ली.

रावत, वीरेन्द्र सिंह 2007. *प्रश्नों का ज्ञान-मीमांसीय आधार—हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन* अप्रकाशित. एम. फ़िल. लघु शोध प्रबंध. शिक्षा विभाग, दिल्ली.